J.M.S. College

B.A. Part-I Philosophy (Hons) Paper-I

31.8.20

Q. Is it correct to say that Indian philosophy is pessimistic? Explain
(क्या यह कहना ठीक है कि भारतीय दर्शन निराशावादी है? व्याख्या करें)

Ans: भारतीय दर्शन पर यह आरोप है कि यह निराशावादी है। यहाँ पर 'निराशा' शब्द के अर्थ पर विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है। 'निराशा' शब्द का पहला अर्थ है - आशा के विरुद्ध अर्थात दुःख। इस दृष्टि से निराशावाद उस सिद्धान्त को कहते हैं जिसके अनुसार जीवन दुःखों से भरा हुआ है। जीवन में सिर्फ आँसू ही आँसू है, अंधकार ही अंधकार है। 'निराशा' शब्द का एक दूसरा अर्थ भी है और वह है - पलायन। जीवन संघर्ष से घबराकर जीवन से भाग जाना अर्थात् जीवन की समस्याओं को सुलझाने से कतराना। इस दृष्टि से 'निराशावाद' वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार जिन्दगी के दुःखों को झेलना नहीं, उनसे बच निकलना है। 'निराशा' शब्द का एक तीसरा अर्थ है - अतिआदर्शात्मकता। अतिआदर्शात्मकता का अर्थ है बराबर दैव-दैव चिल्लाना (पुकारना)। अपने पुरुषार्थ पर विश्वास नहीं, परलोक में विश्वास, यह स्थिति निराशाजनक है। निराशा शब्द के इन अर्थों को जान लेने के बाद, अब जानना शेष रहा कि भारतीय दर्शन निराशावादी है या नहीं।

निराशा शब्द के पहले अर्थ में कहा गया है कि जीवन दुःखों से भरा हुआ है। जिन्दगी एक झूठ आँसू है, जिन्दगी केवल रुदन है, विक्षोभ है। बुद्धदेव ने चार आर्य सत्यों में प्रथम आर्य सत्य में बतलाया है कि जीवन दुःखों से भरा हुआ है। दुःख शारीरिक हो या मानसिक, दुःख प्रकृति से मिले या किसी अन्य साधन से। दुःख ही जीवन की सबसे बड़ी वास्तविकता है। बुद्ध के इस कथन को सभी भारतीय दर्शन एकमत होकर स्वीकार करते हैं। दर्शन आस्तिक हो या नास्तिक - दुःखों की सत्ता में सभी विश्वास करते हैं। इस कथन के आधार पर पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय दर्शन को दुःखवादी अर्थात निराशावादी कहा। यह सही है कि जीवन में दुःख है। भगवान बुद्ध ने प्रथम आर्यसत्य में यह आवश्यक कहा है कि - जीवन में दुःख ही दुःख है, ये इतना ही नहीं कहे। उन्होंने यह भी बतलाया कि दुःखों के कारण भी है, दुःखों को दूर करने के उपाय है, मार्ग है और उन्होंने यह भी बतलाया कि हमारे दुःख दूर हो सकते हैं। मनुष्य के आँसू पोंछे जा सकते हैं। मनुष्य की मुस्कुराहट लायी जा सकती है। सभी भारतीय दर्शनों ने ऐसी बातें कहीं। चार्वाक दर्शन में भी दुःख के साथ सुख की संभावना को स्वीकार किया गया है। इसलिए यह कहना सर्वथा गलत है कि भारतीय दर्शन दुःखवादी है, निराशावादी है।

Scanned with CamScanner

निराशावाद शब्द का दूसरा अर्थ 'पलायन' है। कहा जाता है कि भारतीय दार्शनिक पलायनवादी हैं। भगवान बुद्ध हों या भगवान महावीर, कपिल हों या कणाद, शंकराचार्य हों या पतंजलि या जैमिनि सभी के सभी घर छोड़कर भागे हुए लोग हैं। भगवान बुद्ध ने न केवल कपिलवस्तु का त्याग किया, बल्कि अपनी पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल का भी त्याग किया। जो दार्शनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के बजाय जीवन से ही भाग जाता है, भला उसका जीवन दर्शन संघर्ष की शिक्षा क्या देगा? इसलिए आरोप है कि भारतीय दार्शनिक और इनका दर्शन पलायनवादी है। यह अवस्था निराशाजनक है। इस आरोप का उत्तर यह दिया जाता है कि इन दार्शनिकों ने अपने व्यक्तिगत सुख का त्याग किया। उन्होंने अपने स्वार्थ के बजाय परार्थ अर्थात् जनहित का ख्याल किया। इन सबों का लक्ष्य था, उन राहों को खोज निकालना, जिस पर चलकर मनुष्य जाति सुखी हो सके। मानवता के कल्याण के लिए अपने स्वार्थों का बलिदान कर जिन महापुरुषों या दार्शनिकों ने कल्याणकारी मार्गों की खोज की, जीवन की समस्याओं को सुलझाने की राहें बतलायीं, उन्हें पलायनवादी नहीं कहा जा सकता। अतः इस दृष्टि से भी भारतीय दर्शन को निराशावादी नहीं कहा जा सकता।

निराशा शब्द का तीसरा अर्थ है- अतिआध्यात्मिकता। पुरुषार्थ के बजाय दैव-दैव चिल्लाना, ईश्वर-ईश्वर करना, आत्मा और परलोक की बातें करना, स्वर्ग और नरक की बातें करना- यह बड़ी निराशाजनक स्थिति है। इस दृष्टि से भारतीय दर्शन को निराशावादी कहनेवाले यह भूल जाते हैं कि भारतीय दर्शन में ऐसे बहुत से दर्शन हैं जो ईश्वर में विश्वास नहीं करते, जो दैव-दैव नहीं चिल्लाते, जो स्वर्ग-नरक नहीं मानते, बल्कि सभी दर्शन एकमत होकर स्वीकार करते हैं कि मनुष्य को अपने पुरुषार्थ पर भरोसा करना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य का विधाता स्वयं है। हमारे चार पुरुषार्थ- अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष हैं। सभी भारतीय मोक्ष को अपना जीवन लक्ष्य मानते हैं। मोक्ष का अर्थ है- बंधन से मुक्ति अर्थात् आवागमन से मुक्त होना, स्वतंत्र होना। जिस दर्शन का लक्ष्य बंधन से मुक्ति हो, स्वतंत्रता हो, वह दर्शन अति-आध्यात्मिकतावादी नहीं हो सकता। चार्वाक दर्शन का तो यहाँ तक कहना है कि न स्वर्ग है, न नरक है, न ईश्वर है, न धर्म है, न मोक्ष है, बल्कि मनुष्य और मनुष्य का सुख ही सब कुछ है। इस प्रकार तीसरी दृष्टि से भी भारतीय दर्शन को निराशावादी दर्शन नहीं कहा जा सकता है।

उपरोक्त विवेचन के बाद यह कहा जा सकता है कि निराशावाद, आशावाद से उत्तम है। निराशावाद आदमी को जगाता है और आशावाद आदमी को निश्चिंतता की नींद में सुलाता है। विलियम जेम्स (William James) ने ठीक ही कहा है कि जो दर्शन नैतिक व्यवस्था में विश्वास करता है, वह दर्शन निराशावादी नहीं हो सकता। भारतीय दर्शन की शिक्षा है कि अच्छे कर्मों का अच्छा फल और बुरे कर्मों का बुरा फल होता है। आदमी जैसा करता है, वैसा ही पाता है। आदमी का जैसा वर्तमान होता है उसके अनुरूप वैसा ही उसका भविष्य होता है। इस सिद्धान्त को अदृष्ट कभी अपूर्व और कभी कर्मवाद कहा जाता है। भारतीय दर्शन की नींव में नैतिकता है, व्यवस्था है, अनुशासन है। इस कारण भारतीय दर्शन कभी निराशावादी नहीं हो सकता। कहा यह जाता है कि भारतीय दर्शन का निराशावाद आरंभिक है, अंतिम नहीं। प्रत्येक साहित्य समाज का दर्पण होता है। भारतवर्ष के जितने पुराने नाटक हैं, सभी के सभी सुखान्त हैं। जिस देश का साहित्य सुखान्त हो, उस देश का दर्शन दुःखान्त नहीं हो सकता। इसलिए भारतीय दर्शनों को निराशावादी कहना सर्वथा भ्रामक है। अतः निराशावाद का आरोप भारतीय चिन्तन धारा पर जो पाश्चात्य विचारकों ने लगाया है, वह सर्वथा अनुचित है।

(दर्शनशास्त्र विभाग)

([illegible])
[illegible]
[illegible]
31.8.20